thearyasamaj.org

Date of Publication: 25 April 2015

कमल ज्योति

(मासिक पत्र)

वर्ष-9, अंक-2 मई 2015 विक्रमी संवत् 2072 सृष्टि संवत् 1960853113 एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये सहयोग राशि 1100/-रुपये

ओ३म्

संस्थापक

स्व. श्री भजनप्रकाश आर्य जी

संरक्षक

ओमप्रकाश हसीजा

प्रधान सम्पादक

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
चलभाष : 9810084806

सम्पादक

एल.आर. आहूजा
आचार्य शिव नारायण शास्त्री
अतुल आर्य
चलभाष : 9718194653
दूरभाष : 011-27017780

सहयोगी सम्पादक

प्रिंसीपल हर्ष आर्या
चलभाष : 9999114012
राजीव आर्य
चलभाष : 9212209044
नरेन्द्र आर्य 'सुमन'
चलभाष : 9213402628

प्रभु की शरण में

उरुं नो लोकं अनुनेषि विद्वान स्वर्वत ज्योतिरभयं स्वस्ति।
ऋष्वात इन्द्र स्थविरस्य बाहू उपस्थेयाम शरणा बृहन्ता।।

–ऋ.६.४७.८, अथर्व १९.१५.४

ऋषिः-गर्गः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः-विराट्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ- इन्द्र=हे इन्द्र! **त्वं विद्वान**=तू सर्वज्ञ **नः उरुं लोकं अनुनेषि**=हमें उस महान् विस्तृत लोक में पहुँचा देता है जहाँ **स्वर्वत्**=आनन्द **ज्योतिः**=प्रकाश **अभयम्**=अभय और **स्वस्ति**=कल्याण ही है। हे परमेश्वर! **ते स्थविरस्य बाहू**=तुझ महान् देव के बाहू **ऋष्वा**=सब विघ्न-बाधाओं का नाश करनेवाले हैं **बृहन्ता शरण**=हम उस तुम्हारी (बाहुओं की) अपार शरण में **उपस्थेयाम**= बैठ जाएँ।

विनय- हे परम ईश्वर! हे सब-कुछ जाननेवाले! तुम हमें ज्ञान देकर कभी अपने विस्तीर्ण-खुले, अपार लोक में पहुँचा देते हो-उस लोक में जहाँ कि आनन्द ही आनन्द है और ऐसा आनन्द है कि उसकी प्रतिक्रिया में दुःख, सन्ताप का जन्म नहीं हो सकता, उस ज्योतिर्मय लोक में, जहाँ प्रकाश का साम्राज्य है और जहाँ विस्तीर्ण शुभ्र प्रकाश सागर में अज्ञान व अन्धकार की छाया तक नहीं पड़ सकती, उस लोक में जहाँ परिपूर्ण अखण्ड अभयता है, इन भय के भूतों का जिनसे हम यहाँ हरदम सताये रहते हैं, जहाँ नामोनिशान नहीं है और उस लोक में जहाँ कि कल्याण-ही-कल्याण बरसता है, अकल्याण की जहाँ कल्पना तक नहीं हो सकती हे इन्द्र! तुम ऐसे लोक के वासी हो। हम मनुष्यों को-जीवों को वहाँ ले जा सकते हो! हे मेरे स्वामिन्! अपनी बाहुओं को फैला दो और अपनी महान् शरण में हमें ले लो। हे महान् देव! तुम्हारे ये बाहू सब पाप-ताप का ध्वंस करनेवाले हैं, क्लेश-कष्ट का नाश करनेवाले हैं, विघ्न-बाधाओं को हटाने वाले हैं। इनकी महान् शरण का आश्रय पाये हुए को दुःख, अज्ञान, भय व अकल्याण का स्पर्श भी कैसे हो सकता है? अपने बाहू फैलाओं, करूणामय! हमें उठाने के लिए अपने ये वात्सल्यम बाहू बढ़ाओ जिससे कि हम तुम्हारी परम शरण में आ बैठें, वह गोद जिसमें बैठकर कोई क्लेश नहीं, भ्रम नहीं, भय नहीं, आमय नहीं।

thearyasamaj.org

गतांक से आगे

सामवेद संहिता

–श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा

आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम्।
वनप्रक्षमुदप्रतम् ॥
सहस्त्रधारं वृषभं पयोदुहं प्रियं देवाय जन्मने।
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे राजा देव ऋतं बृहत् ॥872॥

शक्तिशाली अश्वसजोत, ज्ञानी सोम का भजन करें।
अज्ञाननाशक ब्रह्मप्रकाशक, ज्ञानरस में रमन करें॥
हजारों सुख बरसाने वाला, अमर दूध का दाता।
दिव्य जन्म उस से है होता, परम सत्य मिल जाता॥
स्वयं प्रकाशक दिव्य रूप, महान सत्य का रूप है।
आगे आगे ले जाता वह, लक्ष्य दिखाता नेता भूप है॥

अग्निर्वृत्राणि जंगनद् द्रविणास्युविपन्यया।
समिद्धःशुक्र आहुतः ॥
गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे। सीदन्नृतस्य योनिमा॥
ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणो। अग्ने यद्दीयद्दिवि ॥873॥

स्तुति से जगाया दिव्य अग्नि, ज्ञानधन है दान करता।
अज्ञान अघ का नाश कर, भक्तों के सारे दुःख हरता॥
परम सत्य का धारणाकर्ता, मूल तत्व में रहने वाला।
माता बनकर पालन करता, मनमन्दिर में करे उजाला॥
हे अग्ने जब चमक चमक, तू सारी चीजें दिखलाता।
सन्तान ज्ञान विस्तार करे, दृढ़ संकल्प से जीवन आता॥

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम्।
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सद्म पशुमन्ति होता॥
भद्रा वस्त्रा समन्या३वसानो महान्कविनिवचनानि शंसन्।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ॥
समु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तरो यशसां क्षैतो अस्मे।
अभि स्वर धन्वा पूयसानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥874॥

प्रकाश प्रेरणा से टपक, सोम ने अंगों को आधार बनाया।
शुद्ध हृदय यजमान सम, परमानन्द हृदय में आया॥
भद्र भावना से भर कर, रस क्रान्ति प्रेरणा देने वाला।
ज्ञान कर्म इन्द्रियों में आ, बने दिव्यता का रखवाला॥
प्रिय सोम धरा के वासी, उच्च ज्ञान में उत्पन्न होता।
अधिक यशस्वी भक्त से, बनता रक्षक रस सोता॥

एतो न्विन्द्र स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना।
शुद्धैरूक्थैर्वावृध्वासं शुद्धैराशीर्वान् ममत्तु ॥
इन्द्र शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः।
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धि सोम्य ॥
इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे।
शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे शुद्धो वाजं सिषाससि ॥875॥

आओ! प्रकाशक इन्द्र की, आनन्द का उपहार दो।
गीत गाने से वह बढ़ता, सुख की निर्मल धार ले॥
उन्नति पथ से शुद्ध प्रज्ञा, शक्ति को धारण करे।
हे सौम्य परमानन्द सच्चे, ऐश्वर्य को हम वरें॥
शुद्ध प्रज्ञा ऐवर्श्य भक्ति, रमणा साधन दान करती।
विघ्नवाधा नाश करके, शुद्ध शक्ति धन ज्ञान भरती॥

अग्ने स्तोमं मनामहे सिद्धमघ दिविस्पृशः। देवस्य द्रविणस्यवः॥
अग्निर्जुषत नो गिरो होता यो मानुषेष्वा। स यक्षद् दैव्यं जनम्।
त्वमग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः।
त्वया यज्ञं वि तन्वते ॥8761॥

दिव्य गुणों से धन पाने को, अग्निं प्रभु का ध्यान करें।
उच्चलोक के साधक वृक्ष को, संकल्प अग्नि से हम वरें॥
जीवन यज्ञ सिद्ध करता है, अग्नि उसी के गीत सुनें।
सिद्ध करे वह दिव्य भावना, यज्ञ का साधन हम चुनें॥
हे अग्ने तू महा यशस्वी, प्रेम-पात्र बन यज्ञ कराता।
यज्ञों का यह ताना बाना, तेरी कृपा से बुन पाता॥

अभि त्रिपृष्ठं वृषणं दयोधामुशोषिणामवावशंत वाणीः।
वना वसानो वरूणो न सिन्धुवि रत्नधा दयते वार्याणि॥
शूरग्रामः सर्ववीरः सहावाञ्जेता पवस्व सनिता धनानि।
तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्वषाढ़ः साह्वान् पृतनासु शत्रून॥
उरूगव्यूतिरभयानि कृण्वन्त्समीचीने आ पवस्वा पुरन्धी।
अपः सिषासन्नुषसः स्व३र्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान् ॥877॥

तीन लोक को छूने वाले, सुखवर्षक जीवनदाता को।
मेरे गीत बुलाते सोम, स्तुतियोग्य यज्ञ त्राता को॥
बाधाओं को दूर हटाता, भक्तों में सोम रहा करता।
वरूणा बन मनरत्नों सा भरता, बुरे विचारों को हरता॥
सबसे ऊँचा शक्तिशाली, सोम बलों का अधिष्ठाता।
साधना देता अति तीक्ष्ण, लक्ष्यबेधन में शीघ्रकारी।
धीरभाव ऐश्वर्य को देकर, जीवन को विजयी बनाता।
संघर्षों में विजयी बनाता, शत्रु को देता हार करारी॥
प्रेरणा में ज्ञान भरकर, जो अभय का वर देता हमें।
ज्ञान एवं कर्मशक्ति देकर, अज्ञान, हरता है हमारा।
सुख के गणों का दान कर, ऐश्वर्य के प्रति करता इशारा॥

त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः।
त्वं वृक्षाणि हंस्यप्रतीन्येक इत्पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः ॥
तमु त्वा नूनमसुर प्रचेतसं राधो भागमिवेमहे।
महीव कृत्तिः शरणा त इन्द्र प्र ते सुम्ना नो अश्नुवन् ॥878॥

हे इन्द्र तेरा यश यही, तू सरल पथ से गमन करता।
अपनी शक्ति से विरोधों, शक्तियों का गर्व हरता।
तू अकेला ही बहुत है, तू कभी न हार खाता।
कर्मशील जन ही सदा, तुझ अजेय से रक्षा पाता॥
सफलता के भाग सम, तुझ प्राणादाता को पुकारें।
हे इन्द्र तेरी शक्ति पा, हम सभी सुखमूल धारें॥

[क्रमशः]

thearyasamaj.org

गतांक से आगे

चिन्ता से चिन्तन और चिन्तन से चिरन्तन की ओर

–आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

(3) राजनैतिक भय– नेता जनता से भयभीत है। उनमें यह भय है कि दोबारा वोट न मिले तो कुर्सी छिन जाएगी। जनता को यह भय है कि नेता कोई भी आए वह देश का कल्याण नहीं कर सकता। वह अवश्य ही स्वार्थान्ध और धूर्त होगा। राजनैतिक जलूस, जलसे, संस्थाओं की हड़तालें दूसरों को भयभीत करने के लिए है। गाँधी जी की अहिंसा से भी अँग्रेज भयभीत थे। हड़ताल महात्मा गाँधी की विश्व को देन है।

(4) धार्मिक भय– कठोपनिषद् और यहूदी मत में परमात्मा को भय रूप माना गया है। कठोपनिषद् में आता है कि परमात्मा के भय से सूर्य तप रहा है। हवा चल रही है। बादल आते हैं वर्षा होती है। भय से सृष्टि का नियन्त्रण हो रहा है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् में भी आता है कि संसार के सब प्रवाह भय से पूर्ण है। इन्हें ओ३म् की नौका से पार करो। मनुष्य सृष्टि के नियमों के विरूद्ध आचरण करे तो उसे संसार भयानक लगता है। जिस व्यक्ति को तैरना नहीं आता वह समुद्र में छलाँग लगाने से डरता है। जो व्यक्ति सृष्टि के रहस्यों को समझता है और उनके अनुकूल चलता है इसके लिए परमात्मा और प्रकृति प्रेमरूप हैं। ईसा ने कहा है कि (God is love) परमात्मा प्रेम है। सेठों और स्त्रियों का नाभिचक्र कमजोर होता है। क्योंकि सेठ लोग बैठे रहते हैं। बिना भूख के खाना पड़ता है। पेट फूला रहने से नाभिचक्र कमजोर होता है। इसलिए वह कमजोर दिल के होते हैं। स्त्रियों को भी गर्भधारण करना पड़ता हैं इसलिए वे कमजोर दिल की होती हैं। मन्दिरों में ज्यादातर सेठ लोग और स्त्रियाँ ही दिखाई देती है। इनकी भक्ति भय पर आधारित है। कई साधु लोग ऐसा वेश बनाकर रखते हैं जिससे देखने वाला व्यक्ति भयभीत हो जाए और उनकी सेवा करे।

प्राचीन रोमन लोगों ने भय का मन्दिर बना लिया था और भय के देवता की पूजा करते थे। धर्म क्षेत्र में जुलूस, जलसे, धन, भवन, गुरु, शिष्य आदि सब दूसरों के डराने के लिए हैं। परम्पराओं का पालन मनुष्य भय के कारण करता है। ईसा मसीह को तेरहवें दिन फाँसी हुई थी। ईसाइयों में 13 नवम्बर नहीं होता। 12 के बाद 14 आ जाता है। चण्डीगढ़ को बनाने वाला एक फ्रैंच इंजीनियर था। उसने चण्डीगढ़ में 13 नम्बर का सैक्टर ही नहीं बनाया। चण्डीगढ़ के पास ही पंचकूला जो आजकल आबाद हुआ है उसमें भी 13 नम्बर का सैक्टर नहीं है। पुराणों में नरक के चित्र दिखाकर लोगों को भयभीत किया गया है।

ईसाइयों में Quaker नामक सम्प्रदाय भयभीत करनेवाले व्याख्यान देते हैं। ऐसी ही एक ईसाई पादरी के व्याख्यान से एक स्त्री भयभीत हो गई। एक ईसाई पादरी कह रहा था कि नरक में इतनी अधिक ठंड होती है कि वहाँ मनुष्य कितने ही गर्म कपड़े पहन ले और कितनी ही गर्म चीजें खा लें परन्तु उसके दाँत किटकिटाते रहते हैं। एक बूढ़े व्यक्ति ने पूछा कि यदि किसी के दाँत न हो तो उसे यह सजा केसे मिलेगी तो पादरी ने कहा कि नकली दाँत लगा दिए जाएंगे। लेकिन किटकिटाएगा जरूर। इसी प्रकार पुराणों में आता है कि पापी मनुष्य को कहीं तेल की कड़ाइयों में तला जाता है। कई ओर से उसका शरीर काटा जाता है। ऐसे विभिनन कष्टों का दर्शन है। ऐसा ही दर्शन मुसलमानों के 'दोजख' में हैं।

मुंशी प्रेमचन्द की एक कहानी है कि एक व्यक्ति का विवाह हुआ। उसकी पत्नी ने उसके लिए खीर बनाकर रखी। बिल्ली उस खीर को झूठा कर गई। उसकी पत्नी ने बिल्ली को कड़छी फैंककर मारी। बिल्ली वहीं ढेर हो गई। पंडित जी को पता चला इन्होंने उसकी पत्नी को कहा कि तुम इस पाप के कारण कुम्भीपाक नरक में जाओगी। उससे बचने के लिए एक तोले सोने की बिल्ली बनाकर दान करो और कई पंडितों को दान दक्षिणा दो। जब तक यह बात तय हो रही थी बिल्ली उठकर भाग गई। उस स्त्री का भय निवृत हो गया। उसने कहा पंडित जी अब तो कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है।

ऋषि दयानन्द ने धार्मिक भय दूर किया। लोग राहू-केतु आदि ग्रहों से भयभीत रहते थे। पाखण्डी गुरु, दुष्ट सन्यासी की आलोचना करने का किसी को साहस न था। धर्म के क्षेत्र में ठगे जाने पर भी लोग भय से चुप रहते थे। तीर्थ, मूर्ति, अवतार, आदि के खिलाफ कुछ कहना सुनना कठिन था। दूसरे के धर्मग्रन्थों को पढ़ना पाप माना जाता था। ऋषि ने इन सब भयों से जनता को मुक्त किया।

रूस के पावलफ नामक वैज्ञानिक ने कहा है कि दुनिया में धर्म नहीं धार्मिक भय है। इसी के सिद्धान्त पर दिल्ली में एक केन्द्र संस्था खुली है जिसमें सिगरेट, शराब आदि दुर्व्यसन छुड़ाए जाते हैं। जब व्यक्ति सिगरेट पीना चाहता है तो उसे कुर्सी पर बिठाकर एक बिजली का शॉक लगाया जाता है। उस शॉक से उसे दर्द होता है और सिगरेट पीने का रस फीका पड़ जाता है। दिन में ऐसे कई बार किया जाता है। एक सप्ताह के बाद सिगरेट के साथ ही भय का संसार जुड़ जाता है। जब वह व्यक्ति घर जाता है तो सिगरेट को देखकर ही काँपने लग जाता है। उसने जो सिगरेट को देखकर ही काँपने लग जाता है। उसने जो सिगरेट छोड़ा यह उसके जीवन में कोई अच्छाई नहीं पैदा हुई। यह केवल भय पर आधारित है।

thearyasamaj.org

What is Wealth?

In Sanskrit, wealth is known as 'artha'. According to Swami Dayananda, real wealth is that which is acquired by honest means. Wealth which is amassed by ignoring and neglecting the moral principles is a breeding ground for all troubles (Arth vahee hai jo dharma se hee praapt kiyaa jaay aur jo adhram se siddh hota hai usko anarth kahte hein). This is a universal truth. Even the root of the English word 'wealth' is "weal" which means well-being, sound health both-economic and moral. But what constitutes? Whether wealth is counted in terms of gold and currecncy notes only?

According to the scriptures women, gems, wisdom gained by the knowledge of scriptures, adherence to moral principles, maintennance of cleanliness, good words of worldly wisdom and art works- all constitute wealth and worth possessing. They are the sources of wellbeing and happiness. Wisdom lies in translating the knowledge of scriptures into action. It is not enough for a person to adhere to moral principles in isolation. A person must also make sincere efforts to uphold them. This is his social obligation. Words of wisdom, coming from the mouths of seers and great men, have the power of inspire and guide manking. One therefore should adopt a positive approach to wealth, aspire to acquire and strive with perseverance to acquire them. Vatsyaayana lists wisdom gained by the knowledge of scriptures, landed property, precious metals, cattle, food grains, house holds friends and other thinks as the assets which should be acquired and increased. By saying other things, Vatsyaayana left the list incomplete leaving to the wisdom of people. It therefore encompasses even fame earned by good work and contribution to the welfare of the manking (yashas). Both these teacher considered wisdom gained by the study of the scriptures as an assest. It is an intangible but at the same time an invaluable assest. Vatsyayana added friendship to the list of assets. All these help a man in his pursuit of other goals of life. Wealth therefore should not be perceived in isolation from the intangible assests like learning, good conduct and good friends. Wealth is only a means, not the end. Sraddhaa and other names of Lakshmi signify all these aspects of wealth.

गर्मी को कैसे रखें दूर

–डॉ. अंजली मुकर्जी, न्यूट्रीशनिस्ट

गर्मी अपने चरम पर है। सूर्य हमारी त्वचा को मॉयस्चर से वंचित करने में लगा हुआ है। इस मौसम में हम सभी के शरीर का तापमान बढ़ जाता है। इसके अलावा हम गैस, सूजन और सुस्ती का अनुभव करते हैं। अगर हम कम मात्रा में पानी का सेवन करते हैं तो शरीर का तापमान बढ़ जाता है। यहां तक कि लू भी लग सकती है। ऐसे में बुद्धिमानी यही है कि शरीर को ठंडा रखने वाला भोजन ही करें।

शरीर की गर्मी कम करें।

गर्मी को कम करने में मददगार फूड

सब्ज : सब्ज के बीज प्राकृतिक कूलिंग एजेंट हैं। इन्हें पानी में आधे घंटें के लिए भिगो कर रख दें और फिर इसे ठंडे दूध में गुलाब के शरबत के साथ मिलाएं।

प्याज : कच्चा प्याज शरीर को ठंडा रखने में मदद्गार है। कच्चे प्याज को सलाद या फिर चटनी में इस्तेमाल कर खाएं।

आम : लू और दस्त से बचाव के लिए कच्चा आम बहुत उपयोगी है। कच्चा आम विटामिन सी का अच्छा स्रोत्र है। इसके अतिरिक्त कच्चा आम शरीर से नमक और आयरन की कमी को रोकता है।

मसाले : कुछ मसाले जैसे पोस्त, इलायची, चंदन, सौंफ और केसर आदि शरीर को ठंडा रखने में सहायक तत्व हैं।

किशमिश : भीगी हुई काली किशमिश का ठंडे दूध के साथ सेवन लाभदायक है।

गुलकंद : यह ठंडा पेय गुलाब की पत्तियों और चीनी से बना होता है, जो थकान, सुस्ती, मसल दर्द और हीट से संबंधित परेशानियों से बचाता है।

तरल पदार्थ लें : प्रतिदिन आप 8 से 10 गिलास से ज्यादा पानी अवश्य पीएं। इसके अलावा आप नारियल पानी, फलों का जूस और बटर मिल्क का सेवन करें।

- ज्यादातर फल और सब्जियां जैसे ककड़ी, तरबूज, अंगूर, कटहल और पाइनएप्पल हाइड्रेट में मदद करते हैं।
- आधा गिलास अनार के जूस में दो चम्मच आंवले का जूस मिला कर पीएं।
- वेजिटेरियन डाइट लें।
- बहुत ज़्यादा आम खाने से शरीर में गर्मी बढ़ती है। एक दिन में ज़्यादा आम न खाएं।
- प्रतिदिन के खाने में गरम मसाला, मेथी बीज, मस्टर्ड बीज, लाल मिर्च का प्रयोग करने से बचें। ये शरीर की गरमी बढ़ाते हैं।
- कैफीनयुक्त पेय पदार्थों का कम सेवन करें।
- खट्टे, मसालेदार और ऑयली खाने से बचें। मसला, चीज़, खमीरयुक्त भोजन, सिरका और तेलयुक्त खाना बंद कर दें।

thearyasamaj.org

सुख दुःख की घड़ियाँ

- अनु भाटिया, अध्यापिका हिन्दी विभाग

जीवन में सुख दुःख की घड़ियाँ आती है, आकर जाती।
ज्ञानी के चित्त में क्षोभ नहीं मूरख को नाच नचाती है।

हमारे जीवन में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती रहती हैं। बुद्धिमान व्यक्ति वह है जो दोनों परिस्थितियों का मुकाबला डट कर करें। तराजू के बाट पर रखने से ही वस्तु का भार पता चलता है, सोना अग्नि में जलकर ही शुद्ध होता है, इसी प्रकार से ही बुद्धिमान व्यक्ति की परिपक्वता भी प्रतिकूल परिस्थितियों में ही निखर कर सामने आती है। दुःख की घड़ियों का तो मनुष्य को आभार प्रकट करना चाहिए क्योंकि उसी समय अपने और पराये का एहसास होता है, भगवान का नाम भी तो इन्हीं घड़ियों में याद आता है।

सुख के माथे सिल पड़े, नाम हृदय से जाय।
बलिहारी उस दुःख की, पल-पल नाम रटाय॥

फूल के साथ काँटे, दिन के साथ रात यही तो प्रकृति का नियम है जो आए हुए दुःख को मन ही मन पी जाते है, उसकी भनक भी किसी को नहीं लगने देते। कवि रहीम भी ऐसा ही कहते है।

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुन इठलइहैं लोग सब, बाँटि न लइहैं कोय॥

अपने मन की व्यथा को अपने अंदर रखने में ही समझदारी है क्योंकि अधिकांश लोग दूसरे का दुःख सामने से तो खेद प्रकट करते हैं परन्तु अंदर से बहुत प्रसन्न होते हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि-

तुलसी पर घर जाय कर, दुःख न कहिये रोय।
अपनो भरम गवाइये, बक्त न पूँछे कोय॥

विवेकी मनुष्य तो सहर्ष दुःख को गले लगाता है। मनुष्य को चाहिए कि हर परिस्थिति में कर्त्तव्यारूढ़ होकर अपना कर्म करे। भौतिक सुख दुःख तो प्रारब्धाधीन न चाहने पर भी आते-जाते रहेंगे परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति इनमें रमन नहीं करते।

सुख स्वपना दुःख बुलबुला, दोनों है मेहमान।
सबका आदर कीजिए, जो भेजें भगवान॥

इसलिए हर हाल में मुस्कुराना और हँसना सीखो और रोना छोड़ो।

गरीब के दान की महिमा

गुजरात की प्रसिद्ध राजमाता मीणलदेवी बड़ी उदार थी। वह सवा करोड़ सोने की मोहरें लेकर सोमनाथ जी का दर्शन करने गयी। वहाँ जाकर उसने स्वर्ण-तुलादान आदि किये। माता की यात्रा के पुण्य-प्रसंग में पुत्र राजा सिद्धराजने प्रजा का लाखों रूपये का लगान माफ कर दिया। इससे मीणलके मन में अभिमान आ गया कि मेरे समान दान करनेवाली जगत् में दूसरी कौन होगी! रात्रि को भगवान् सोमनाथ जी ने स्वप्न में कहा-'मेरे मन्दिर में एक बहुत गरीब स्त्री दर्शन करने आयी है, तू उससे उसका पुण्य माँग।'

सबेरे मीणलदेवी ने सोचा, 'इसमें कौन सी बड़ी बात है। रूपये देकर पुण्य ले लूँगी।' राजमाताने गरीब स्त्री की खोज में आदमी भेजे। वे यात्रा में आयी हुई एक गरीब ब्राह्मणीको ले आये। राजमाताने उससे कहा-'अपना पुण्य मुझे दे दे और बदले में तेरी जितनी इच्छा हो, उतना धन ले ले।' उसने किसी तरह भी स्वीकार नहीं किया। तब राजमाताने कहा-'तूने ऐसा क्या पुण्य किया है, मुझे बता तो सही।'

ब्राह्मणीने कहा-'मैं घर से निकलकर सैकड़ों गांवो में भीख माँगती हुई यहाँ तक पहुँची हूँ। कल तीर्थ का उपवास था। आज किसी पुण्यात्माने मुझे जैसा-तैसा थोड़ा-सा बिना नमक का सत्तू दिया। उसके आधे हिस्से से मैंने भगवान् सोमेश्वर की पूजा की। आधे में से आधा एक अतिथि को दिया और शेष बचे हुए से मैंने पारण किया। मेरा पुण्य ही क्या है! आप बड़ी पुण्यवती हैं, आपके पिता, भाई, स्वामी और पुत्र-सभी राजा हैं। यात्रा की खुशी में आपने प्रजा का लगान माफ करवा दिया, सवा करोड़ मोहरों से शंकर जी की पूजा की। इतना पुण्य कमानेवाली आप मेरा अल्प-सा दीखनेवाला पुण्य क्यों माँग रही हैं? मुझपर कोप न करें तो मैं निवेदन करूँ।'

राजमाताने क्रोध न करने का विश्वास दिलाया। तब ब्राह्मणीने कहा-'सच पूछें तो मेरा पुण्य आपके पुण्य से बहुत बड़ा हुआ है। इसी से मैंने रूपयों के बदले में इसे नहीं दिया। देखिये-1. बहुत सम्पत्ति होने पर भी नियमों का पालन करना, 2. शक्ति होनेपर भी सहन करना, 3. जवान उम्र में व्रतों को निबाहना और 4. दरिद्र होकर भी दान करना-ये चार बातें थोड़ी होनेपर भी इनसे बड़ा लाभ हुआ करता है।'

ब्राह्मणीकी इन बातों से राजमाता मीणलदेवी का अभिमान नष्ट हो गया। शंकर जीने कृपा करके ही ब्राह्मणी को भेजा था।

thearyasamaj.org

शेखर वाणी

परमात्मा को देखना हो तो, ज्ञानीजनों की संगति में बसो। उनके संग में रहते-रहते तुम्हें भी-वह पवित्र प्रज्ञा की दिव्य-दृष्टि प्राप्त हो जायेगी-जिससे प्रभु का प्रत्यक्ष होता है। उसके परमपद परम-धाम का दर्शन होता है। इसलिए तो पहली भक्ति 'संतो' का संग कहा है-''प्रथम भगति संतन्ह कर संगा।'' अज्ञानियों के बीच जिन्दगी गुजारोगे तो, सारी जिन्दगी एक अंधेपन में ही बीत जायेगी। जहां सिवाय परतन्त्रता, दु:ख बेवसी व लाचारी में कुछ भी नहीं है। ज्ञानी जन, भले ही हमारी तरह दीखते हों पर, उनकी दृष्टि हमारी तरह नहीं होती, उनकी सोच हमारी तरह की श्रुद्र सोच-विचार नहीं होती।

अज्ञान में 'जीवन' जियोगे-तो सारी जिन्दगी मायूसी में बदल जायेगी। कहा है- 'कि मैं अपने घर में हूँ अब इस तरह से, कि जैसे कोई किसी अजनबी के घर में हो।। ज्ञानी, के लिए अजनबी भी अपने हो जाते है, और अज्ञानी के लिए अपने भी अजनबी प्रतीत होते है। ज्ञानी के लिए सब बराबर है।-

क्योंकि अब कोई कामना, चाहना, तृष्णा, लोभ, लालच, नहीं है।-संसार में कुछ होने कुछ पाने की चाह नहीं है। वह जो है, जितना है, जैसा है उसमें ही वह सतत् संतुष्ट है। ''चाह गयी चिन्ता मिटी मनुवा बेपरवाह। जिनको कुछ ना चाहिए सोई शाहनशाह।। ''चाह के कारण ही 'चिन्ता' है, तनाव है विषाद है। ज्ञानी, कामना को चाहना को विदा कर देता है- अपने मन से। अपने मन से वह संतोष, धैर्य धारण कर लेता है। संतुष्ट सततं योगी (गीता) जो 'योगी भक्त है-वह सतत संतुष्टि में जीता है, वह सदा वर्तमान में जीता है, वह न अतीत की स्मृति में न भविष्य की कामनाओं में जीता है।

जादूगर और संत दोनों ही चमत्कार करते हैं। जादूगर, जो चमत्कार दिखाता है-उसके पीछे हाथ की सफाई होती है। परन्तु सन्त, ज्ञानीजन, जो चमत्कार दिखाते हैं। उसके पीछे मन की सफाई निर्मलता होती है। निर्मल मन वाले संतजन ही सुरय: हैं।

तमाम रोगों की दवा है बेल

-श्री परशुराम संबल

बेल एक प्रसिद्ध फल है। यह देश के लगभग सभी भागों में पाया जाता है। मई और जून के महीने में फल देने लगाता है।

बेल का वृक्ष प्राय: जंगलों में पाया जाता है। अब इसे बागों में भी उगाया जाता है। बेल के वृक्ष की ऊंचाई लगभग बीस-पच्चीस फुट होती है।। बेल के पत्तों में तीन चार पत्रक होते हैं। पत्रों के बीच में कांटे होते हैं। फरवरी माह में इस वृक्ष पर फूल आने शुरू हो जाते हैं बेल के फल सफेद अथवा हल्के हरे रंग के छोटे-मोटे गुच्छों में बड़े सुंदर और मधुर सुगंध लिये हुए होते हैं।

इसका फल गोल तथा बड़ी गेंद के आकार का होता है। फल का छिलका कठोर होता हैं यह पकने पर हल्के नारंगी रंग का हो जाता है। पके हुए बेल सुगंधित होते हैं। इसके अंदर का गूदा पीला होता है और उसमें सफेद रंग के बीज होते हैं। बेल वृक्ष की पत्तियां, छिलका, डाली और जड़ भी प्रयोग में आती है। ग्रंथों में बेल को रसायन का नाम दिया गया है। यूनानी चिकित्सकों का मत है कि बेल एक पाचक और शक्तिवर्द्धक फल है। इसके व्यापक गुणों से विदेशी डाक्टर भी प्रभावित हुए है। डॉ. डीमक लिखते हैं कि बेल रक्तशोधक, मल रोधक और पौष्टिक फल है। डॉ. ग्रीन का दवा है कि बेल का शर्बत नित्य सवेरे पीने से अजीर्ण नष्ट हो जाता है।

हिन्दू धर्म में बेल को एक पवित्र वृक्ष माना गया है। इस दृष्टि से बेल के वृक्ष का प्रत्येक भाग कल्याणकारी होता है। इसकी पत्तियां बेल-पत्र के रूप में शिवजी पर चढ़ाई जाती हैं।

पद्म पुराण में वर्णन है कि मंदार पर्वत जाते हुए पार्वती के पसीने की बूंद से बिल्व (बेल) नामक वृक्ष की उत्पति हुई। कारण कुछ भी रहा हो, किन्तु यह तो सत्य है कि बेल का वृक्ष वातावरण को आरोग्यपूर्ण बनाता है। इसके फल का स्वाद भी बहुत मधुर और शीतलता प्रदान करने वाला है।

बेल का फल, लकड़ी, हमारे लिये बड़ी उपयोगी है। इसके गूदे, पतों तथा बीजों में उड़नशील, तेल पाया जाता है। फल में प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस, कार्बोहाइड्रेट आदि तत्व पाये जाते हैं बेल स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयोगी फल है। मेदा और आंतों के लगभग सभी विकारों में हितकर है। बालकों को संग्रहणी या अतिसार में बेल बहुत लाभदायक है।

सूखे गूदे का चूर्ण सुबह पानी के साथ लेने से भूख को बढ़ाता है और आंव का नाश करता है। गले की पीड़ा को शांत करता है।

बेल पत्रों का रस छ: माशे दिन में तीन बार लेने से कृमि नष्ट हो जाते हैं। बेल का शर्बत और मुरब्बा गर्मियों में बहुत ही लाभकारी है। यह घावों को भी अतिशीघ्र भरता है। इसका गूदा पुष्टिकारक है। बेल की लकड़ियां हवन के काम लाई जाती हैं।

राम वनवास के समय पंटवटी में जिन पांच प्रमुख वृक्षों का वर्णन मिलता है उनमें से बेल वृक्ष एक है।

thearyasamaj.org

बन्धू

–राम जन्म सिंह (विश्वमिल)

ईश्वर प्रस्तुति प्रार्थना उपासना के सातवें मन्त्र में बन्धु शब्द व्याख्या है। जिसमें यह कहा गया है कि हे मनुष्यों मैं तुम्हारा भ्राता के समान सुखदायक हूँ। वेद के इस वचन से यह पूर्ण विश्वास और श्रद्धा के साथ कहा जा सकता है कि भ्राता से बढ़कर और कोई सम्बन्धी सुख दायक नहीं है।

संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसी दास ने राम चरित मानस में कहा है कि सुत वित नारि भवन परिवारा। होहिजाहि जगबारीहबारा।। प्रस विचारि जागहु तुम ताता/मिलई न जगत सहोदर भ्राता।।

लक्षिमण को राम का सहोदर भ्राता बताया है। जब कि इतिहास साक्षी है कि श्री लक्षिमण जी श्री राम के सौतेले भाईये/लौकिकं त्यौहार में एक माँ जाया को सहोदर कहते है। इससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि यजुर्वेद के इस मन्त्र में बन्धू शब्द केवल एक माँ जाया के लिए नहीं हैं। परन्तु प्राणी भाव के लिए आया है। महर्षि स्वामी दयानन्द ने अहिंसा शब्द की परिभाषा करते हुए लिखते है कि प्राणी भाव से बैर भाव का त्याग करना है।

प्रथम बन्धू का अर्थ है जुड़ा हुआ वह परम पिता परमात्मा हमारे साथ सदा-सदा के लिए जुड़ा है। इसलिए वह हमारा बड़ा भाई है क्योंकि वह कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ता है। मरणोपरान्त भी वह हमारे साथ रहता है और हमारी इच्छानुसार किये कर्मो के आधार पर ही हमारे रहने के लिए शरीर रूपी भवन का निर्माण करता है। सदैव हमारी रक्षा और पालन करते हुये सद्मार्ग की ओर प्रेरित करता है। संसार की प्रत्येक वस्तु और शरीर हमें मिला हुआ है। जुड़ा नहीं है। मिली हुई वस्तु अपनी नहीं होती है। इसीलिए एक न एक दिन सब की सब हमारा साथ छोड़ा जाती है। केवल परमात्मा ही ऐसा है जो किसी भी परिस्थिति में हमारा साथ नहीं छोड़ता है। इसलिए वही एक हमारा सहोदर बड़ा भाई है। हम उसके प्रिष्ठ बन्धु (छोटा भाई) है। जो हमारी इच्छानुसार ही निर्माण करता और भ्रमण कराता है। शांख्य दर्शनकार कपिल मुनी लिखते है कि परमात्मा संसार की रचना करने में परतन्त्र है और न्याय करने में स्वतन्त्र है। परमात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है लेकिन फल भोगने में परतन्त्र है।

बन्धू शब्द का दूसरा अर्थ है बधा हुआ। संसार के समस्त प्राणी जो अपने कर्मानुसार नाना प्रकार की योनियों में भटक रहे है वे सबके सब हमारे प्रिष्ठ अर्थात छोटे भाई के समान है। मनुष्य योनी में आने वाली आत्मा पशु पक्षी में विचरण करने वाली आत्मा के साथ जुड़ा नहीं है। वे हमारे साथ बधे हुये है। इसलिए वे हमारे प्रिष्ठ बन्धु कहे जाते है। उनके साथ हमारा दूध का रिस्ता है। दूध के रिस्ते से वो सब हमारे छोटे भाई है। एक माँ पुत्र को जन्म देती है। एक गाय बछड़े को जन्म देती है। एक शेरजी शेर को जन्म देती है। जैसे पुत्र प्रथम अपनी मां का दूध पिता है उत्पन्न आदि का भोजन वाद में करता है। वैसे ही गाय का बछड़ा पैदा होते ही घास ही खाता माँ का दूध ही पिता है। उसी प्रकार शेर भी शेरनी का प्रथम दूध ही पीता है मांस बाद में खाता है।

दूध के इस रिश्ते को समझ कर वे सब अपने बड़े भाई मनुष्य की ओर आश लगाये रहते है। समय-समय पर अपनी रक्षा और पालन के लिए हमें पुकारते है। जैसे हम अपनी रक्षा और सुख के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते है वैसे वे लोग अपने जीवन निर्वाह के लिए हमें पुकारते है। वे तो परमात्मा को जानते ही नहीं है। हमें अपनी आंखों से देखते है। इसलिए हमें जानते और पहचानते है। हमारी गुहार लगाते है। जब कोई मनुष्य उन पशुओं या पक्षियों को वध करने के लिए ले जाता है तब उन्हें इस बात का आभास हो जाता है कि अब हमारे दूध के रिश्तों की उपेक्षा हो गयी है। लेकिन हाय रे मानव तू अज्ञानता वश अपने बिजी स्वार्थ के बसी भूत होकर उनकी प्रार्थना को अनसुनी कर देता है। उनका वध कर देता है। उसके चित्त की वित्ति इतनी बदल जाती है कि वह अपनो को भी मारने में जरा सा संकोच नहीं करता है। बड़े से बड़ा जघन्य अपराध करने में लग जाता है। भला जब भाई-भाई को मारने लगे तो उस परिवार, समाज और राष्ट्र की रक्षा कौन कर सकता है।

अपना घर जो आप जलाये।
उसकी बिगड़ी कौन बनायें।।

राष्ट्र कवी मैथिलीशरण गुप्त जी लिखते है।

मनुष्य मात्र बन्धु है, यही बड़ा विवेक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य वाहय भेद है।।
अनर्थ है कि बन्धु ही न बन्धु की व्यथा हरे।
मनुष्य है वही कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

जिस दिन मनुष्य वेद के इस मन्त्र में आये बन्धु शब्द के रहस्य को समझ लेगा उस दिन उसको सारा संसार अपना कुटुम्ब सा दिखाई देने लगेगा। उसको कोई पराया नहीं दिखाई देगा। तब कहेगा गुरु नानक देव शब्दों में गायन करने लगेगा। एक नूर तो सब जग उपजे कौन भले कौन मंदे। इस छोटे से लेख को लिखते हुये पूर्ण आशा करता हूं कि आप लोग इसका श्रद्धा से पढ़ेगे और श्रद्धापूर्वक अपनायेगें। यदि कहीं कोई गलती हुई होगी तो मेरी अज्ञानता समझ कर श्रद्धा से क्षमा भी कर देंगे।

thearyasamaj.org

संवतसर में प्रकृति में भी नयापन होता है

–श्री सुमेर चन्द

छोड़ो नकल, असल पर आओ,
न्यू ईयर नहीं, संवतसर मनाओ।।

क्या आपने अपने अधिकतर देश में आधे दिसंबर से लेकर पूरे जनवरी तक पेड़ों पर नये पत्ते आते देखे हैं?

क्या आपने इसी समय में ढेर सारे फूल खिले देखे हैं?

क्या आपने इसी समय में भंवरे फूलों पर मंडराते देखे हैं?

क्या आपने इसी समय में तितलियां उड़ती देखी हैं?

क्या आपने इसी समय में मधुमक्खियां फूलों को चूमती देखी हैं?

क्या आपने इसी समय में कोयल मीठा राग सुनाती सुनी है?

क्या आपने इसी समय में मोर नाचता देखा है?

क्या आपको इसी समय में सुहावनी हवा चलती मिली है?

क्या आप इसी समय में हल्के-फुल्के वस्त्र धारण करके घर से बाहर निकले हो?

क्या आपकी सरकार इन दिनों नया बजट पेश करती है?

क्या कोई व्यापारी इसी समय में अपने खाते बदलता है?

क्या स्कूलों के बच्चे इसी समय में नई कक्षाओं में जाते हैं?

क्या इसी समय में विद्यार्थी नई पुस्तकें व कापियां खरीदते हैं?

क्या पहली जनवरी के निकट, सूर्य धुंध के कारण समय पर निकलता देखा है?

तो फिर ऐसा क्या-क्या होता है कि आप पहली जनवरी को नया-नया चिल्लाते हो?

तो फिर क्या नया होता है कि आप आधी रात तक जागकर 'हैप्पी न्यू ईयर' बोलते हो।

तो फिर क्या नया होता है कि आप तोहफे लेते-देते हो?

तो फिर क्या नया होता है कि आप नये कलैंडर व डायरियां बांटते हो?

तो क्या नया होता है कि आप हर दफ्तर, होटल व ढाबे पर 'हैप्पी न्यू ईयर' लिखा देखते हो?

तो क्या होता है कि व्यापारी भ्रष्टतम सरकारी अधिकारी के लिए भी पांचतारा होटल में मोटी राशि खर्च करके टेबल बुक कराते हैं? पराई नारियों के साथ मटकाते हैं?

इन सभी प्रश्नों का उत्तर है क्योंकि पहली जनवरी को सात समुद्र पार वाले ऐसा करते हैं तो आप भी हीनभावना का शिकार होकर ऐसा ही करते हैं? फिर सवाल उठता है कि जो हो सकता है कि वे लोग अपनी स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार वे ऐसा करते हों। हो सकता है कि वे ऐसा यों करते हों कि वहां पर पहली जनवरी के निकट सभी कुछ नया ही नया होता हो। हो सकता है उनकी अपनी प्राचीन संस्कृति ऐसा करने को बताती हो तो फिर आपकी क्या मजबूरी है कि आप भी ऐसा करते हैं? विशेष तौर पर तब, जब आपके अड़ोस-पड़ोस में, या दूर-दूर तक कुछ भी तो नया नहीं होता। है न अपनी बुद्धि को ताला जड़कर अंधाधुंध नकल करना? है न बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना? है न अपनी संस्कृति को घटिया साबित करना? गोद वह लेता है जिसके अपना न हो। परन्तु यहां तो अपना होते भी दूसरों को गोद लेकर फूले नहीं समाते। कारण बस एक ही है हम आधुनिक से लगने चाहिए। इससे बढ़कर इस महान राष्ट्र की बदकिस्मती और क्या होगी कि यहां के पढ़े-लिखों को अपनी संस्कृति हीन लगे और दूसरों की श्रेष्ठ लगे?

जितने समय में पृथ्वी सूर्य के गिर्द एक चक्कर लगाती है उतने समय का नाम वर्ष होता है। सवाल उठता है कि गणना कहां से शुरू की जाये। अब से 2065 वर्ष पहले महाराज विक्रमादित्य ने अपने राज के विद्वानों की एक टीम बनाई जो सारे वर्ष की परिस्थिति को देखकर ऐसी तिथि सुझाएं जो नया वर्ष शुरू करने के लिए उपयुक्त हो। इन विद्वानों ने चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को नया वर्ष शुरू करने के लिए सुझाया।

इस सुझाव के ठोस कारण थे। सबसे पहला कारण तो यह था कि नया न केवल बोला जाये बल्कि नया ही नया चारों ओर दिखाई भी दे। पतझड़ के मौसम के बाद बसंत ऋतु आरंभ होती है जो सभी ऋतुओं का राजा कहलाती है और चैत्र मास के मध्य तो बसंत ऋतु अपने पूर्ण यौवन पर होती है। इससे उपर्युक्त समय भला नये वर्ष के लिए और कौन सा हो सकता था? रहा सवाल नया ही नया दिखाई देने का तो मूर्ख से मूर्ख, ठेठ अनपढ़ गंवार भी स्वयं देख सकता है कि पेड़ नये-नये कोमल-कोमल पत्तों से सजे-धजे दिखाई देते हैं।

जहाँ पर कुछ दिनों पहले सूखी घास भी नज़र नहीं आती थी वहां पर फूलों की खुशबू बिखरी रहती है। फूल स्वयं तो मुस्कराते ही हैं साथ ही अपने को देखने वालों को भी मुस्कराने के लिए गुदगुदी सी करते हैं। भंवरे इन फूलों का चुम्बन करते दिखाई देते हैं। मधुमक्खियाँ इन फूलों पर भिनभिनाती हैं। रंग-बिरंगी तितलियाँ इन फूलों पर मस्ती से झूमती हैं।

कोयल जो सर्दी के कारण कई महीनों से पेड़ों में चुप्पी साधे हुए थी अब अपना मीठा राग अलापती है। मोर जी भरकर पंख फैलाकर नाचता है। हवा इतनी मतवाली चलती है कि मानव मन स्वयं नाचने सा लग जाता है। शरीरमें इतनी स्फूर्ति आ जाती है कि वह हवा में उड़ने सा लगता है। सर्दी के कारण जो

thearyasamaj.org

शरीर अकड़ा- जकड़ा सा था वह अब हल्का-फुल्का हो जाता है।

हमारे पूर्वज कहते थे कि चैत्र मास में मानव शरीर के खून का बदलाव भी होता है। इसीलिए नीम की कोपलें चबाने का चलन बना था ताकि खून शुद्ध रहे।

सारी सरकारें अपने नये बजट बनाती हैं। व्यापारी अपने नये खाते लगाते हैं। विद्यार्थी नई कक्षाओं में जाते हैं तथा नई पुस्तकें लेते हैं। किसान के घर भी नया अनाज आ जाता है अर्थात् चारों तरफ नया ही नया होता है।

परन्तु बड़े खेद की बात है कि जिस नयेपन को अपने देश का साधारण व्यक्ति देखता है उसे हमारे पढ़े-लिखे, हमारे विद्वान् तथा हमारे मार्गदर्शक नहीं देख सकते। उनकी बुद्धि पर आधुनिकता की मोटी परत चढ़ी है। वह अपनी जांची परखी मान मर्यादाओं का सौदा सस्ते में करके अपनी संस्कृति को गर्त में धकेलते हैं। नया वह नहीं जिस दिन कुछ भी नया न हो बल्कि वह है जिस दिन नया ही नया हो, केवल आंखों को बल्कि रूह को भी नया लगे।

ज़िंदादिली

–श्री मुरारी लाल शर्मा

जिंदगी जिंदादिली का नाम है।
मुर्दादिल ख़ाक जिया करते हैं।।

ये पंक्तियां किसी कवि की क्या ही मनोहर कृति है कहने के लिए तो इस संसार में बहुत से लोग 'जिंदा' हैं, परन्तु वास्तव में बहुत ही कम लोग जिंदा मिलेंगे। आज हम भारतीय बालको के सन्मुख वास्तव में जिंदा कहलाने योग्य एक फ्रांसीसी नवयुवक की एक जीवन- घटना प्रस्तुत करते हैं। इसका एक यह भी विशेष कारण है कि हमारे देश के अधिकांश लोग कहने मात्र को ही जीवित हैं। आत्मा की अमरता के गीत तो दिन-रात गाते रहते हैं, परन्तु मृत्यु का नाम सुनते ही थरथर काँपने लगते हैं। बहुत सम्भव है कि इस नवयुवक की यह जीवन-घटना पढ़कर हमारे जीवन में भी कुछ लाभकारी परिवर्तन हो जाये।

गत यूरोपीय महासमर में जर्मनी और फ्रांस की सेनाओं में घोर युद्ध हो रहा था। असंख्य सैनिकों के युद्ध में काम आ जाने के कारण फ्रांस में युद्ध में जाने वाले स्वयंसेवकों (वालंटियरों) की भरती धड़ाधड़ हो रही थी। 18 वर्ष के एक नवयुवक ने भी अपनी मातृभूमि फ्रांस की सेवा करने के लिए युद्ध में जाने को नाम दे दिया था और बड़ी उत्सुकता से आज्ञा पाने की प्रतीक्षा कर रहा था।

युवक दोपहर के लगभग एक बजे कुर्सी पर बैठा समाचार पत्र पढ़ रहा था। इसी समय पोस्टमैन ने आकर उसके हाथ में एक लिफ़ाफ़ा दिया। ज्योंही युवक ने लिफाफा खोलकर चिट्ठी पढ़ी, उसका मुखमंडल खिल उठा। कारण, वह चिट्ठी लड़ाई के दफ्तर से आई थी। उसमें लिखा था–'आपको आज शाम के चार बजे आवश्यक सामान के साथ लड़ाई के दफ्तर में उपस्थित होने की आज्ञा दी जाती है। रात की नौ बजे की गाड़ी से तुम्हें लड़ाई पर जाना होगा।' युवक ने चिट्ठी तो मेज़ पर रख दी और उस्तरा- साबुन आदि सामान लेकर हजामत बनाने लगा।

इसी समय युवक का एक मित्र आया और सलाम करके बोला–'मित्र! सुना है तुमने लड़ाई पर जाने के लिए नाम दे दिया है?'

युवक ने हंसकर उत्तर दिया–'नाम दे दिया है? यह देखिये, ऑर्डर भी आ लिया! शाम को चार बजे लड़ाई के दफ़्तर में उपस्थित होना है।'

मित्र ने कहा–'तो फिर हजामत बनाकर बाल क्यों बना रहे हो? कौन जाने जाते ही गोली का शिकार बन जाओ और ये केश मिट्टी में मिल जायें!'

युवक ने अपने मित्र से कहा–'मित्र! मुझे तो तुम्हारी बुद्धि पर तरस आता है। जब तक ज़िंदा रहना है तो एक वीर के समान, और मरना है तो भी वीर के समान। कायर की मौत जीने से तो मरना ही अच्छा है! फिर मैं तो अपनी जननी जन्मभूमि की सेवा करने जा रहा हूँ, मित्र!

पाई हुई प्रतिष्ठा मनुष्यत्व की गँवाई।
ले जन्म, जन्म-भू की जिसने न लौ लगाई।।

संसार में सचमुच उसी मनुष्य का जीवन सफल है जो अपनी जन्म-भूमि के काम आये।'

इस प्रकार की बातें करते-करते तीन बज गये। युवक ने नौकर को भेजकर दफ्तर जाने के लिए तांगा मंगाया। तांगा आने पर उसमें अपना बिस्तर और हैंडबैग रख, मित्र से हाथ मिला, युवक हँसता हुआ ताँगे में बैठ लड़ाई के दफ़्तर को चल दिया।

पाठक! इसे कहते हैं ज़िंदादिली या ज़िंदगी। अब अपने हृदय पर हाथ रखकर विचारिये कि आप ज़िंदा हैं या मुर्दा? यदि जिंदा नहीं तो मुर्दों के लिए इस संसार में स्थान नहीं। स्थान तो है केवल ज़िंदों के लिए। अतः जीना और मरना सीखिये! जिसे जीना और मरना नहीं आता, उसको संसार कोई टके को भी नहीं पूछता!

thearyasamaj.org

बेमिसाल तुलसी

तुलसी में कई औषधीय गुण होते हैं। हृदय रोग हो या सर्दी जुकाम, भारत में सदियों से तुलसी का इस्तेमाल होता चला आ रहा है और क्या-क्या है इस पौधे की खूबियाँ, आइये डालते हैं एक नज़र–

सर्दी जुकाम में लाभप्रद–सर्दी जुकाम होने पर तुलसी की पत्तियों को चाय में उबालकर पीने से राहत मिलती है। तुलसी का अर्क तेज़ बुखार को कम करने में भी कारगर साबित होता है।

कफ–करीब सभी कफ सीरप को बनाने में तुलसी का इस्तेमाल किया जाता है। तुलसी की पत्तियाँ कफ साफ करने में मदद करती हैं। तुलसी के कोमल पत्तों को चबाने से खांसी और नज़ले से राहत मिलती है।

गले की खराश–श्वास संबंधी समस्याओं का उपचार करने में तुलसी खास उपयोगी साबित होती है। शहद, अदरक और तुलसी को मिलाकर बनाया गया काढ़ा पीने से ब्रोंकाइटिस, दमा, कफ और सर्दी में राहत मिलती है। नमक, लौंग और तुलसी के पत्तों से बनाया गया काढ़ा इन्फ्लुएँजा (एक तरह का बुखार) में फौरन राहत देता है।

गुर्दे की पथरी–तुलसी गुर्दे को मजबूत बनाती है। यदि किसी के गुर्दे में पथरी हो गई हो तो उसे शहद में मिलाकर तुलसी के अर्क का नियमित सेवन करना चाहिए। छह महीने में फर्क दिखेगा।

हृदय रोग–तुलसी खून में कोलेस्ट्राल के स्तर को घटाती है। ऐसे में हृदय रोगियों के लिए यह खासी कारगर साबित होती है।

बच्चों के लिए रामबाण–बच्चों को बुखार, खाँसी और उल्टी जैसी सामान्य समस्याओं में तुलसी बहुत फायदेमंद है।

तनाव–तुलसी की पत्तियों में तनाव रोधीगुण पाये जाते हैं। हाल में हुए शोधों से पता चला है कि तुलसी तनाव से बचाती है। तनाव से खुद को दूर रखने के लिए कोई भी व्यक्ति तुलसी के 12 पत्तों का रोज दो बार सेवन कर सकता है।

मुंह का संक्रमण–अल्सर और मुँह के अन्य संक्रमण में तुलसी की पत्तियाँ फायदेमंद साबित होती हैं। रोजाना तुलसी की कुछ पत्तियों को चबाने से मुँह का संक्रमण दूर हो जाता है।

त्वचा रोग–दाद, खुजली और त्वचा की अन्य समस्याओं में तुलसी के अर्क को प्रभावित जगह पर लगाने से कुछ ही दिनों में रोग दूर हो जाता है। नैचुरोपैथी द्वारा ल्यूकोडर्मा का इलाज करने में तुलसी के पत्तों को सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया गया है।

सांसों की दुर्गन्ध–तुलसी की सूखी पत्तियों को सरसों के तेल में मिलाकर दाँत साफ करने से सांसों की दुर्गन्ध चली जाती है। पायरिया जैसी समस्या में भी वह खासा कारगर साबित होती है।

सिर का दर्द–सिर के दर्द में तुलसी एक बढ़िया दवा के तौर पर काम करती है। तुलसी का काढ़ा पीने से सिर के दर्द में आराम मिलता है।

आँखों की समस्या–आँखों की जलन में तुलसी का अर्क बहुत कारगर साबित होता है। रात में रोजाना श्यामा तुलसी के अर्क की दो बूँद आँखों में डालना चाहिए।

कैसे करें लाडले की देखभाल

हर कोई चाहता है कि उसका नन्हा-मुन्ना हमेशा स्वस्थ और तंदुरुस्त रहे। शिशु के साथ बरती गई थोड़ी सी लापरवाही उसके लिए नुकसान दायक साबित हो सकती है। इसलिए यह ज़रूरी है कि आप अपने शिशु की परवरिश में कुछ बातों का ख्याल रखें।

सीधे न छिड़कें पाउडर–बच्चे की त्वचा पर सीधे पाउडर न छिड़कें। इससे उसे सांस लेने में तकलीफ हो सकती है। पाउडर को किसी बाउल में डालकर पाउडर पफ की सहायता से आहिस्ता-आहिस्ता लगायें।

कब्ज होने पर रखें ध्यान–यदि शिशु को कब्ज है तो एक कप गर्म पानी में ब्राउन शगर डालकर शिशु को पिलाएँ। इससे उसे काफी आराम मिलेगा।

पेट दर्द में करें मसाज–शिशु के पेट में दर्द है तो हल्के हाथों से उसके पेट की मसाज करें या पानी में सौंफ उबालकर उसे छानने के बाद पानी को ठँडा कर लें। इसे शिशु को पिलाएं। आराम मिलेगा।

दाँत दर्द में करें मसूढ़ों की मसाज–शिशु के दांत में दर्द हो तो लौंग के तेल से मसूढ़ों की मसाज करें। उसे राहत मिलेगी।

चटाई बिछाकर खिलाएँ खाना–देखा गया है कि बच्चे आमतौर पर भोजन फैला देते हैं। इसलिए बच्चों को खाना देते समय चटाई या अखबार बिछा दें।

धर्म, संस्कृति एवं स्वास्थ्य की मासिक पत्रिका

कमल ज्योति

डी-796, सरस्वती विहार,
दिल्ली-110034

अपने जीवन की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए 'कमल ज्योति' पत्रिका अवश्य पढ़े और इष्ट मित्रों को भी पढ़ाएं। सदस्य बनें और बनाएं।

thearyasamaj.org

कितना लाभदायक है मैथीदाना

–वैद्य बीरबल मुद्गल, पानीपत

मेथी और आलू की सब्जी (भुजी) साथ में कटोरा भर दही, रोटी का मजा...क्या कहने!

हरी व ताजा मेथी वाली मक्की की रोटी, साथ में मक्खन, घी, दही या लस्सी, पौष्टिकता में अपनी बराबरी नहीं रखती। भोजन का स्वाद और सुगंध बढ़ाने के लिए मेथी दाना का प्रयोग लगभग हरेक घर में होता है।

मधुमेह में मेथी दाने को जीवनदायनी औषधि माना गया है। यह मधुमेह के कुछ रोगियों पर मेथी दाना का सेवन कराये जाने पर पाया कि मात्र दस दिन के प्रयोग से खून में ग्लूकोज (शर्करा) का स्तर उल्लेखनीय रूप से घट गया और पेशाब में इसकी मात्रा साठ प्रतिशत से भी अधिक कम हो गई।

सावधानीवश इसका प्रयोग तभी करना चाहिए जब तक खून में शर्करा का स्तर बढ़ा रहे। मधुमेह के रोगियों को रोजाना दो चम्मच मैथीदाना का चूर्ण दूध और पानी से लेना चाहिए। जामुन की सूखी गुठलियां और मेथीदाना पीसकर छानकर शीशी में भरकर रख लें। एक चम्मच इस मिश्रण का रात को सोने से पहले ताजा पानी के साथ लेते रहना शर्करा का स्तर नियंत्रित रखता है।

मैथी का काढ़ा अल्सर रोग से छुटकारा दिलाने में सक्षम है। पैरों-टांगों व कमर-दर्द में मैथी दाश्ना सर्वोत्तम है। मैथीदाना को घी में भूनकर, कूट-पीसकर गुड़ मिला लड्डू बना प्रयोग करें। आठ ग्राम मैथी दाना तथा बीस ग्राम गुण को पानी में खूब उबालकर पीने से कब्ज, जोड़ों का दर्द और कमर-दर्द की शिकायत दूर हो जाती है।

रोजाना मैथीदाना का चूर्ण बीस ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम लेने से वात रोग दूर हो जाते हैं।

मूत्राधिक्य : बार-बार पेशाब होने की स्थिति में, एक कपमेथी की पत्तियों का रस, आधा चम्मच कत्था और एक चम्मच शक्कर मिलाकर, चार-पांच दिन लगातार लेने से बहुमूत्र रोग से मुक्ति मिलती है।

घुटनों का दर्द : सुबह के समय पांच ग्राम मेथी चूर्ण की फंकी लेने से वृद्धावस्था में घुटनों का दर्द नहीं होता। मेथी दाना का काढ़ा प्रतिदिन अढ़ाई माह तक पीते रहने से घुटनों और टखनों का दर्द ठीक हो जाता है। एक गिलास पानी में एक चम्मच मैथी डालकर इसे धीमी आंच पर दस-पन्द्रह मिनट तक पकाएं। इस काढ़े को सुबह चाय की जगह तथा रात को भोजन के एक घंटा बाद रोजाना सेवन करें।

हृदय रोग में : 6 माशा मैथीदाने के काढ़े में बीस ग्राम शहद मिलाकर सुबह-शाम सेवन करें। हृदय रोग दमा और कफ वाली खांसी में मुफीद है।

रक्तचाप : मैथीदाना व सोय के बीज हम वजन लेकर कूट लें। प्रतिदिन सुबह-शाम जल के साथ लेने से रक्तचाप घटतास है।

मैथीदाना का एकमात्र दुष्प्रभाव यह है कि यह वायु विरेचन है इसलिए शुरू के दिनों में मैथीदाना के सेवन से कुछ रोगियों में अतिसार अथवा गैस्ट्रिक की शिकायत हो सकती है। परन्तु कुछ ही दिनों में यह शिकायत धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है।

आर्य समाज सैनिक विहार के भवन विस्तार का शुभारम्भ एवं आर्य समाज स्थापना दिवस आयोजित

रविवार 22 मार्च 2015 को आर्य समाज सैनिक विहार में आर्य समाज के 141वां स्थापना दिवस आयोजित किया गया। साथ ही आर्य समाज मन्दिर के ऊपरी तल के भवन विस्तार हेतु शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आचार्य राम निवास शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री सेवक जगवानी जी के मधुर प्रवचन हुए। वेद प्रचार मण्डल उ.प्र. दिल्ली के प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य जी, वेद प्रचार मण्डल, उ.प्र. दिल्ली के महामन्त्री श्री जोगिन्दर खट्टर, श्री सुनील गुप्ता, श्री विनय अग्रवाल, विंग कमाण्डर बी.आर. के कपूर, श्री देवेन्द्र दहिया, श्री सुदेश खुराना, श्री वी.पी. गुप्त, श्री चरणजीत सिंह चड्ढा, श्री प्रवीण कोहली श्रीमती सोनल सहगल, श्रीमती रिनी सरीन, श्रीमती अरूणा चावला, श्री सतीश चन्द्र मखीजा, श्री राजेन्द्र गरबा आदि आर्य नेताओं ने प्रथम शिला रखकर भवन निर्माण कार्य का शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर श्री देवेन्द्र दहिया जी ने अपने पूज्य पिताजी की पुण्य स्मृति में एक कमरे के निर्माण का सम्पूर्ण व्यय (लगभग दो लाख रूपये)करने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर आर्य समाज के सभी अधिकारी, सदस्य एवं सदस्याएं उपस्थित थे। अन्त में शान्ति पाठ एवं ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

thearyasamaj.org

RNI No.DEL BIL/2008/25452 Total Pages 12 ओ३म् Posting Date 5 or 6 May 2015 DL (N)0225/2015-17

प्रेषक Date of Publication: 25 April 2015

कमल ज्योति

मई 2015 (मासिक) एक प्रति का मूल्य 10 रुपये

डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034,

फोन : 27017780

महान आत्माएं फल वाले वृक्ष के समान होती हैं, जो स्वयं कड़कती धूप में रह कर दूसरों को शीतल छाया तो प्रदान करते ही हैं और साथ ही अपने स्वादिष्ट तथा मीठे फल दूसरों को खिलाकर उनकी क्षुधा तृप्त भी करती हैं। ठीक इसी स्वभाव की थीं–श्रीमती ओम कुमारी पाहूजा

सब की प्रेरणा स्रोत, मार्ग दर्शक, आदर्श एवं त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति

पुण्यात्मा स्व. श्रीमती ओम कुमारी पाहूजा धर्मपत्नी स्व. श्री सतपाल पाहुजा

प्रथम पुण्य तिथि

सरल, सरस, सहृदया, परोपकारिणी, दानी, ईश्वर भक्त, स्व. श्रीमती ओम कुमारी पाहूजा को शत्-शत् नमन।

31.12.1939–15.05.2014

जीवन के हर क्षण में आपके द्वारा दिखाया गया सच्चाई, कर्त्तव्य एवं निष्ठा का मार्ग हमें हमेशा सही दिशा में बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा।

परमपिता परमात्मा आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

श्रीमती वन्दना पाहुजा (पुत्र वधु)
(पत्नी स्व. श्री राजीव पाहुजा)
श्री देवंश-श्री लक्ष्य (पौत्र)

श्री रविन्द्र वर्मा (दामाद)
श्रीमती सुषमा वर्मा (सुपुत्री)
श्री सौरभ वर्मा-श्री सिद्धार्थ वर्मा (दौते)

श्री विपीन खुराना (दामाद)
श्रीमती नीना खुराना (सुपुत्री)
कु. सुरभी-कु.सुरुची (दौतीयां)

माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट एवं 'कमल ज्योति' परिवार के सभी सदस्य

-अतुल आर्य

स्वामी-माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक एल.आर. आहूजा, चलभाष : 9810454677 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-5, दूरभाष : 41548503 मो. 9810580474 से मुद्रित। कार्यालय : डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 से प्रकाशित